प्राकृत भाषा के मनीषीः आचार्य सुनीलसागर जी महाराज

डॉ. कोमलचन्द्र जैन
सहायक–आचार्य
आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन
शोधपीठ, कानपुर

**"दुर्लभ मानुष जन्म है, देह न बारम्बार,
तरुवर ज्यों पत्ता झड़े, बहुरि न लागे डार।**

भारतीय साहित्यिक परंपरा में प्राकृत भाषाा का विशेष स्थान रहा है। तीर्थंकर महावीर के काल में यह भाषा सदाचार की भाषा रही। सम्राट अशोक और खारवेल के समय प्राकृत भाषा को राज्य भाषा का गौरव प्राप्त हुआ। आचार्य कुन्दकुन्द और अश्वघोष के समय काल में यह भाषा साहित्यिक भाषा के रूप मे प्रचलित रही। प्राकृत साहित्य की दीर्घ काल यात्रा में एक विपुल साहित्य प्राप्त होता है जो अनेक विधाओं में उपलब्ध है जैसे काव्य नाटक, चरित काव्य, कथा साहित्य और चम्पू आदि।

भारत के सांस्कृतिक नीले आकाश में जिन महानविभूति ने वर्तमान आधुनिक युग में प्राकृत भाषा एवं प्राकृत साहित्य को नवजीवन दिया है उन महान आचार्यों में अंकलीकर परम्परा के चतुर्थ पट्टाधीश आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज का नाम सर्वोपरी है। वे मात्र साहित्यकार नहीं, अपितु वे आधुनिक प्राकृत युग एक युग के प्रणेता है, समाज सुधारक, गुरुभक्त और प्राकृत भाषा के स्वाभिमान के प्रखर पक्षधर है।

5 फरवरी 2009 को श्रवणबेलगोला की पावन धारा पर आपका का मंगल प्रवेश हुआ। वहां आपके द्वारा ''णमो जिणिंद गोम्मटं तथा भद्दबाहुचरियं की रचना शौरसेनी प्राकृत भाषा में की गई। जिस रचना को 11 अप्रैल 2009 को को आयोजित **''प्राकृत भाषा के विविध आयाम''** पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में डॉ. मयूरी शाह द्वारा पढा गया। जिसे सुनकर श्री चारुकीर्ति जी भट्टारक एवं उपस्थित समस्त जनसमूह भाव विभोर हो गया। श्री चारुकीर्ति जी भट्टारक जी ने आचार्य श्री को उसी समय ''अभिनव नेमिचन्द्र चक्रवर्ती कहकर पुकारा और कहा कि प्राकृत भाषा में आचार्य नेमिचन्द्र जी के बाद लगभग 1000 वर्ष के अन्तराल में पहली बार किसी ने प्राकृत भाषा में स्तुति लिखी। विद्वानों एवं जनसमूह की उपस्थिति में श्री चारुकीर्ति स्वामी जी ने आचार्य श्री की बहुत प्रंशसा की और **''प्राकृताचार्य''** की उपाधी से अलंकृत किया। आचार्य श्री द्वारा उसी सभा में प्राकृत भाषा में धारावाह प्रवचन दिया गया, जिस सुनकर विद्वानों का जनसमूहदाय आनन्द विभोर हो गया।

आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज का जन्म मध्यप्रदेश के सागर जिलान्तर्गत तिगोडा (हीरापुर) नामक ग्राम में श्री भागचन्द्र जी जैन एवं मां श्रीमति मुन्नीदेवी जैन के यहां आश्विन कृष्ण दशमी, वि.सं 2006 अर्थात 7 अक्टूबर 1977 को हुआ। इनका शुभ नाम संदीप जैन रखा गया।

आचार्य श्री (ग्रहस्थ–संदीप) की प्रारम्भिक शिक्षा किशुनगंज के सरकारी स्कूल में सम्पन्न हुई। 1989 में आप धार्मिक शिक्षा एवं लौकिक शिक्षा ग्रहण करने मोराजी सागर गये जहां पर बी.कॉम और शास्त्री की शिक्षा प्राप्त की। अल्पावस्था में पोस्ट मार्डम का दृश्य देखकर वैराग्य हो गया और ब्रह्मचर्य व्रत को धारण कर लिया। 20 वर्ष की अल्पायु में ही 20 अप्रैल 1997 को महावीर जयंती के पावन दिन बरुआसागर झांसी में तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मतिसागर जी द्वारा जैनेश्वरी दिगम्बर दीक्षा ग्रहण की।

निरंतर गुरु सान्निध्यमें अध्ययरत गुरुभक्ति और आगम अध्यात्म के चिंतन ध्यान से योगी जैसे निखर गये। आपकी तीक्ष्ण बुद्धि और अनुपम योग्यता देखकर तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज ने आपको आचार्य पद से विभूषित करने का निर्णय किया लेकिन आपने विनम्र और लघु भाव से आचार्य श्री से कहा कि आपके चरणों में रहन यही सच्चा पद है, अन्य पद की इच्छा नहीं और योग्यता भी नही है। परन्तु जिनधर्म प्रभावक तपस्वी सम्राट ने एक भी बात नही मानी और 25 जनवरी माघ शुक्ल सप्तमी को आचार्य श्री की जन्म जयंति के अवसर पर आचार्य पद प्रदान किया।

सरलस्वभावी, मृदभाषी,बहुभाषाविद् विशिष्ट गुणों की गंध से आपका व्यक्तित्व चारो और पुष्पों के तुल्य महकले लग। गुरु आज्ञा से आडूल, सोलापुर, गोम्मटश्वर बाहुवली आदि अनेक स्थानों पर विहार कर जिनधर्म की प्रभावना की।

आचार्य सुनीलसागर जी महाराज द्वारा लिखित ''विश्व का सूर्य' और ''दूसरा महावीर'' पुस्तक देखर परम पूज्य तपस्वी सम्राट सन्मतिसागर जी महाराज ने अपने गुरुओं के प्रति पूर्ण समर्पण भाव देखा जो पट्टाचार्य पद के लिए होना चाहिए । इसके अतिरिक्त आपका विशिष्ट ज्ञान, प्रज्ञा, स्वाभाव, संघ का नेतत्व करने की क्षमता, अपना बनने की कला, गुरुओं के प्रति आत्मनिष्ठा, गुरु परम्परा के प्रति सम्मान और उसे निर्वाह करने की क्षमता आदि योग्यता जब तपस्वी सम्राट ने सुनीलसागर जी के अन्तस्थ हृदय में देख लिए और अपने शिष्य को अच्छी तरह परख लिया। जैसे जोहरी रत्न को सुनार सोने को परख लेने के बाद ही खरीदता। वैसे ही गुरु ने सब तैयारी के बाद बहुत सोच समझकर अपना पद सुनीलसागर जी को दिया।

26 दिसम्बर 2010 के दिन आचार्य सन्मतिसागर जी महाराज की आज्ञा एवं लिखित आदेशनुसार, योग्यतानुसार, योग्यतम शिष्य होने के कारण सारे देश व मुम्बई समाज के गणमान्य जनो द्वारा अंकलीकर परम्परा का चतुर्थ पट्टाधीश के रुप में विशालतम संघ की जिम्मेदारी आपको सौंपी गयी।

प्राकृत साहित्य सहस्राधिक वर्षों से धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक दृष्टि से भारतीय जनजीवनका प्रतिनिधि साहित्य रहा है। इसमें तत्कालीन सामाजिक जीवन के अनेक तत्व दृष्टि गोचर होते है। भारतीय इतिहास और संस्कृति इन दोंनों का निर्माता है –प्राकृत साहित्य। भारतीय लोक संस्कृति के सांगोपांग अध्ययन या उनके उत्कृष्ट रमणीय रूप दर्शन का अद्वितीय माध्यम है– प्राकृत साहित्य।

प्राकृत भाषा देश की एक प्रमुख धरोहर है। जिसका संरक्षण एवं संवर्धन भारतीयता की समग्रता के साथ अभिज्ञान के लिए अनिवार्य है। इस भाषा को जाने बिना हम भारतीय इतिहास और संस्कृति का पूर्ण ज्ञान प्राप्त नही कर सकते। इस भाषा में ऐतिहासिक, दार्शनिक, धार्मिक और लोकिक अनेक विषयों पर पर्याप्त सामग्री उपलब्ध होती है।

प्राचीन काल से लेकर आज तक प्राकृत भाषा में ग्रन्थ रचना न्यूनाधिक रूप से निरन्तर चली आ रही है। यद्यपि हम देखते हैं कि शनैः शनै हिन्दी आदि विभिन्न आधुनिक भाषाओं के प्रारम्भ होने से प्राकृत भाषा में ग्रन्थ रचना मन्द होती जा रही है लेकिन उसका प्रवाह आज भी रूका नही है।

आचार्य सुनीलसागर जी महाराज एक महान संत और एक महान लेखक है, जिनकी प्रतिभा चारो ओर सूर्य सी चमक रही है। आप एक उत्कृष्ट आचार्य एवं विद्वान है, आपने पूर्वाचार्यों आचार्य कुन्दकुन्द, आचार्य नेमीचन्द्र चक्रवर्ती आदि महान आचार्यो की भांति

आधुनिक युग में शौरसेनी प्राकृत भाषा में अपनी लेखनी चलाकर अनेक ग्रंथों की रचना की है और प्राकृत साहित्य का संवर्धन किया है। आप द्वारा रचित प्राकृत साहित्य निम्नवत् हैं–

1. भावणासारो
2. णीदीसंगहो
3. प्राकृत बोध
4. भद्दबाहुचरियं
5. सम्मदी–सदी
6. भावालोयण
7. वयण सारो
8. नियप्प–झाणसारो
9. थुदि संगहो
10. अज्झप्पसारो
11. बाहुबली
12. अनंतवीर्य
13. बारह भावण
14. भक्ति संग्रह
15. मुनिकुंजरो
16. महातवस्वी
17. सुनीलप्राकृत समग्र
18. सच्चकहा

ये सभी रचनाऐं प्राकृत भाषा में लिखी गयी है। जिसमें मानवीय मूल्य मानव से भगवान बनने की कला के बारे में बताया गया है। हमें कैसे जीना है, कैसे हमारा जीवन होना चाहिए?, समाज कल्याण, में, आत्मा के हित में, समाज के सहयोग के रुप में, न्याय, नीति और दार्शनिक विषयों पर चर्चा की है।

प्राकृत भाषा मनीषी–आचार्य सुनीलसागर जी महाराज– आचार्य श्री के द्वारा रचयित प्राकृत समग्र ग्रंथ को पढने से यह सहज स्फुरित होता है कि आचार्य सुनीलसागर जी महाराज प्राकृत भाषाा और विशेष रूप शौरसेनी प्राकृत भाषा के प्रकाण्ड पण्डित तो है ही इसके अतिरिक्त प्राकृत भाषाओं के भी **विज्ञ** है।

आपके द्वारा रचयित **''प्राकृत बोध''** (प्राकृत व्याकरण) पुस्तक का अध्ययन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि आप शौरसेनी प्राकृत भाषा के ज्ञाता होने के साथ–साथ अर्धमागधी, मागधी, महाराष्ट्री आदि प्राकृत भाषा के भी विद्वान है। प्राकृत बोध पुस्तक में आपने प्राकृत व्याकरण सम्बन्धी नियम एवं विविध प्राकृत भाषाओं की विशेषताओं को सहज और सरल शैली में लिखा है, जिसे सामान्य व्यक्ति भी पढकर बोधगम कर सकता है।

आचार्य श्री द्वारा रचित भावणासारो, अज्झप्पसारो और नियप्प–झाणसारो आदि ग्रन्थों रचनाओं में जो आध्यात्मिक गहराई,तत्वचिंतन और आत्मा की अनुभूति की झलक मिलती है, वह किसी प्राचीन दार्शनिक परंपरा की सी प्रतीत होती है। जब उनकी वाणी में आत्मा की शुद्धि, सयंम की साधना और मोक्ष का मार्ग वर्णित होता है, तो ऐसा अनुभव होता है मानो स्वयं आचार्य कुन्द कुन्द या आचार्य नेमिचन्द्र जैसे परम तपस्वी और तत्ववेत्ता बोल रहे हों। अज्झप्पसारो में आचार्य श्री लिखते है कि

णिया अप्पा परमप्पा, अप्पा अप्पम्मि अत्थिज्ञ संपुण्णं।

तो कि गच्छदि बहिरे, अप्पा अप्पम्मि सव्वदा झेयो।।

अर्थात् निज आत्मा ही परमात्मा है, आत्मा अपने आप में सम्पूर्ण है, तो भिर तुम बाहर क्यो जाते हो, आत्मा में आत्मा का हमेशा ध्यान रखो।

इस प्रकार उनकी लेखनी में शब्द नहीं, अनुभूति बोलती हैं, तर्क नहीं आत्मदर्शन की सुगंध समाई होती है।

संगोष्ठी एवं विशेष आयोजन के अवसर पर देश के विशिष्ट विद्वानो और अतिथिओं की उपस्थित में प्राकृत भाषा में धारावाह प्रवचन दिये गये है। जिन्हे सुनकर सभी गणमान्य लोग आश्चर्य चकित हो जाते है और विचार करते है कि जिस भाषा में तीर्थंकर महावीर के जन कल्याणकारी उपदेश गर्भित है। ऐसी प्राचीन प्राकृत भाषा को धाराप्रवाह बोलने वाले महान सन्त आज विद्यमान है। वे सभी आपके प्रवचन और आर्शीवाद प्राप्त कर आपने आप को बहुत सौभाग्यशाली समझते हैं।

आपकी विद्वता, प्रज्ञता, प्राच्य भाषाओं को संवर्धन की तीव्र इच्छा शक्ति, राष्ट्रभक्ति व भारतीय संस्कृति को ऊँचाइयो पर ले जाने के लिए अनेक उपाधियों से अलंकृत किया गया है। जिसमें कैलियाफोर्निया यूनिवर्सिटी और बिटिश नेशनल यूनिवर्सिटी व संहयोगी संस्थाओं ने अंलकृत किया है।

सुनील प्राकृत समग्र रचना को देखकर ब्रिटिश नेशनल यूनिवर्सिटी द्वारा आपको डी. लिट्, बुक ऑ वर्ल्ड रिकॉर्ड लंदन द्वारा साहित्य रत्न, इंडिया प्राइड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स द्वारा राष्ट्र गौरव और आइकॉन एम्बेसेडर आफ वर्ल्ड रिकॉर्डस द्वारा वर्ल्ड रिकार्ड प्रमाण प्रत्र से अलंकृत किया गया है।

आप प्राकृत भाषा मनीषी के साथ–साथ प्राकृत भाषा को सुधारस प्रदाता है। जब भी प्राकृत भाषा के विषय में चर्चा की जाती है तो आधुनिक रचनाकारों में आपका नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है।

प्राकृत भाषा जो भारतीय संस्कृति का प्राण है। उसके संवर्धन और विकास करने के लिए आपकी मंगल प्रेरणा से आपके सान्निध्य में लगभग 30 से भी अधिक प्राकृत राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्टीय संगोष्ट्रीयों को आयोजन किया गया है। षटखंडागम मूल, षटखंडागम अनुशीलन, प्रवचनसार, अज्झप्सारो, समयसार, मूलाचार, जीवकाण्ड, द्रव्यसंगह, धवला, पंचास्तिकाय, और भक्ति संगहो आदि प्राकृत ग्रन्थों पर 20 से अभी अधिक वाचनाऐं हुई सम्पन्न हुई है।

आचार्य श्री की मंगल प्रेरणा से प्राकृत भाषा संरक्षण के लिए शिक्षण संस्थान्र और सामाजिक संगठन की स्थापना हुई है। जिसमें सन्मति प्राकृत विद्यापीठ और प्राकृत विकास फाउण्डेशन प्रमुख रूप से है। प्राकृत विद्यापीठ में डॉ. विनय कुमार जैन के संरक्षण में लगभग 80 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे है। जहां पर आधुनिक शिक्षा के साथ साथ प्राकृत भाषा के प्रमुख ग्रन्थों का अध्ययन भी कराया जाता है।

प्राकृत भाषा के सरक्षण के उददे्श्य से दाहोद, गुजरात में प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन की स्थापना आपके मंगल आशीर्वाद से हुई थी। जिसके तत्वाधान और डॉ आशीष जैन आचार्य के अत्यधिक प्रयास से 2025 में लगभग 100 से अधिक प्राकृत शिक्षण शिविरों आयोजन किया गया । इन शिविरों के माध्यम से प्राकृत भाषा की शिक्षा को बढावा

मिला और लगभग 1000 से भी अधिक लोगों ने प्राकृत शिक्षण शिविरों का लाभ प्राप्त किया।

आचार्य श्री न केवल एक विद्वान है बल्कि एक प्रेरक व्यक्तित्व भी है। प्राकृत भाषा में साहित्य रचना करने के लिए आप अपने शिष्यों को भी प्रेरणा प्रदान करते है। आपकी प्रेरणा और आशीर्वाद से मुनि श्री सुश्रुत सागर जी महाराज ''. मात्र 30 वर्ष की आयु में..... .....'' ग्रन्थ की रचना लगभग 120 गाथाओं में की। जिस प्राकृत विकास फाण्उडेशन द्वारा प्रकाशित किया गया।

आपकी प्रेरणा और परिश्रम से ही प्राकृत भाषा को शास्त्री भाषा का दर्जा प्राप्त हुआ। आपकी मंगल प्रेरणा का यह प्रतिफल है कि आज प्राकृत भाषा संरक्षण के लिए अनेक शोध संस्थान आगे आ रहे है। अनेक विश्वविद्यालयों में पुनः प्राकृत विभाग जीवन्त हो रहे है।

प्राकृत भाषा के संरक्षण, प्रचार और पुनर्जागरण में आचार्य सुनीलसागर जी महाराज का योगदान महत्वपूर्ण और अनुकरणीय है। उन्होंने इस भाषा को केवल धार्मिक ग्रंथों तक सीमित नहीं रखा बल्कि उसे जनसामान्य तक पहुंचाकर एक सांस्कृतिक अभियान में प्ररिवर्तित कर दिया। आज जब भारतीय प्राच्य भाषओं की पहचान वैश्विक मंच पर पुनर्स्थापित करनेकी आवश्यकता है तब आचार्य श्री जैसे तपस्वी महार्षि का योगदान विशेष रूप से प्रेरणादायक है।